Chapter-4

चतुर्थ परिच्छेद

प्रतीक नाटकों में सामाजिक एवं राजनैतिक अभिव्यक्ति के मूलभूत कारण:-

1. बौद्धिकता
2. स्व अस्तित्व की भावना
3. नारी स्वतन्त्रता के प्रति नये दृष्टिकोण
4. स्वच्छन्द यौन चेतना
5. नैतिक एवं धार्मिक मूल्यों के बिखराव
6. परम्पराके प्रति नये स्वर
7. सामाजिक जीवन में विद्रूपताओं की नया दिशायें

प्रतीक नाटकों में सामाजिक और राजनैतिक अभिव्यक्ति के मूलभूत कारण:-

साहित्य की समस्त विधाओं में अभिव्यक्त सामाजिक और राजनैतिक अभिव्यक्ति के विविध पहलू संस्कृति दर्शन, सभ्यता, भाषा, शिक्षा, कला, जाति, गोत्र, विवाह, परिवार, संस्था, समिति, सम्प्रदाय, लोकविश्वास, राज्य व्यवस्था एवं राजनैतिक संगठनों आदि मूलभूत आधार होते हैं जिनकी अभिव्यक्ति तत्कालीन समाज व राजनीति पर पड़े बिना नहीं रहता। सामाजिक व राजनैतिक परिवर्तन के साथ ही नाट्यलेखन तथा उसके प्रस्तुतीकरण में अन्तर आने लगा है। वेद, पुराण, काव्य शास्त्र, राजनीतिशास्त्र, छन्दशास्त्र, अर्थशास्त्र, आदि में नाट्यकला के पर्याप्त संकेत मिलते हैं। जिससे नाटक और समाज का सम्बन्ध स्वतः ही प्रमाणित हो जाता है। नाटक एक सामाजिक कला होने के साथ साथ देश की राजनीति को भी बड़ी गहराई के साथ प्रभावित करना है। इसीलिए तो नाट्य शास्त्रियों ने प्रेक्षक को सामाजिक का पर्याय माना है। नाट्य सृजन का मूल प्रेरणास्थल मानव समाज होता है। अतः समाजगत प्रवृत्ति से अनुप्राणित होकर ही लेखक नाट्य सृजन की ओर उन्मुख होता है। आचार्य धनंजय ने नाटकीय प्रवृत्तियों को सामाजिक जीवन से अनुस्यूत माना है। बदलती हुई सामाजिक स्थितियों तथा टूटते राजनैतिक मूल्यों ने आज देश के सामने एक गहरा संकट ला खड़ा किया है। समकालीन व्यक्ति परिवार से अलग होकर आत्म निर्वासन की स्थिति को भोगने के लिए अभिशप्त है। वैयक्तिक सम्बन्धों के विघटन के कारण आज का व्यक्ति समाज से कटकर अलग होता जा रहा है। राजनैतिक परिस्थितियों ने भी तत्कालीन नाट्यकारों को पर्याप्त रूप से प्रभावित किया है, राष्ट्रीय कांग्रेस का विभाजन शिव सेना, अकाली दल, जनता दल, भारतीय जनता पार्टी, मुस्लिम मजलिस, आदि विविध संगठनों के उदय होने से सामाजिक और राजनैतिक स्थितियों का समकालीन नाटकों

पर पर्याप्तप्रभाव पड़ा ।

सामाजिक जीवन के वैयक्तिक समस्यायें तथा व्यापक राजनैतिक सन्दर्भ एक साथ नाटक में अभिव्यक्त हो रहे हैं । आज का नाटककार किसीएकही बिन्दु पर केन्द्रित न होकर जीवन के खण्डखण्ड अनुभवों को वाणी देकर दर्शकों के सम्मुख साकार कर देना चाहता है । अतः सामाजिक और राजनैतिक आत्मव्यक्ति के मूलभूत कारणों बौद्धिकता स्वअस्तित्व की भावना, नारी स्वतन्त्रता, के प्रति नये दृष्टिकोण, स्वच्छंद यौन चेतना, नैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में बिखराव परम्परा के प्रति नये स्वर, सामाजिक जीवन में विद्रूपताओं कीनयी दिशायें, आदि के विषय में जान लेना आवश्यक होजाता है ।

1- बौद्धिकता :-
==============

आज भारतीय समाज एक विकट सामाजिक मोड़ से गुजर रहा है । बौद्धिकता के परिणामस्वरूप आज की नयी पीढ़ी में अथल पुथल मची हुई है, वर्तमानसमाज एक प्रकार के बिखराव और अनिश्चितता की राह पर चलरहा है । समकालीन प्रतीक नाटकों में समाज,परम्परा, स्त्री पुरूष, सम्बन्ध, अर्थ एवं संस्कृति के प्रति व्यक्त विचारों में स्पष्ट रूप से नवीनता के दर्शन होते हैं। साथ ही सामाजिक राजनैतिक आर्थिकतथा नैतिक प्रतिमानों पर प्रश्न चिन्ह लगा दियाहै । देवयानी का कहना है नाटक की देवयानी अपनी पहचान, की और अर्पणा कुत्ते की नायिकाआशा तीसरा हाथी, की विभा, और वाह रे इन्सान, की नायिका, कान्ति व तुलसी बौद्धिकता से प्रेरित पात्रहैं । आधे अधूरेकी नायिका सावित्री बौद्धिकता से सम्पन्न होकर सामाजिक मर्यादाओं कोनकारती है पूर्ण पुरूष की तलाश में भटकती हुई वहअनेक पुरूषों से सम्बन्धस्थापित करती है इसी प्रकार देवयानी का कहना है नाटक में देवयानी प्राचीन मान्यताओं रीति

रिवाजोंको खोखला साबित कर देती है वह प्राचीन मान्यताओं व संस्कारों को नकारती है, भारतीय विवाह प्रणाली का नयी व्यवस्था को प्रस्तुत करतेहुए वह कहता है " शादी केवल एक पास है, जिसको हाथ में रखने से, खुलेआम घूमने, एक विस्तर में सोने और दुर्घटना के समय सामाजिक विरोध नहोने का सर्टीफिकेट मिल जाता है 3. सुनो शेफाली की नायिका शेफाली उच्च वर्गीय वकुलसे विवाह नहीं करना चाहती क्योंकि उसकीदया दृष्टि पर वह जीना नहीं चाहती । इससे उसका स्वाभिमान आहत होता है, वह अपनी माँ से कहती है, मुझ पर रहम खाकर कोई मुझसे शादीकरे, नहीं मुझे चाहिए मुझे ऐसी शादी । आधुनिक नारी शिक्षित होकरअपनी मालिक स्वयं बनना चाहती है । "सादर आपका" की नायिका लज्जावती पोस्ट व हैसियत की दौड़ में पति से आगे निकलकर अपने अहम भाव के कारण पारिवारिक सम्बन्धों को नकारती है, टगर की नायिका टगर पति केद्वारा आत्म सम्मान पहुँचाये जाने पर समस्त पुरुष जाति से बदला लेने को तत्पर हो जाती है । 5. पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली पर आधारित आधुनिक शिक्षा पद्धति ने बौद्धिकता को अत्यधिक विकसित करने में सहयोग दिया है । वैज्ञानिक विकासके साथ जीवन की यान्त्रिकता पारिवारिक विघटन,असन्तोष, स्नेहहीनता, आदि ने भी आज के मनुष्य को सोचने विचारने पर अधिक मजबूर कर दिया है ।

11. स्व-अस्तित्व की भावना:-

प्रतीक नाटकों पर अस्तित्व विचारधारा कापर्याप्त प्रभाव पड़ा है । आज का व्यक्ति स्वपरक अधिक होगया है । इलाचन्द जोशी के शब्दों में "आधुनिक समाज में पुरुष की बौद्धिकता ज्यों ज्यों बढ़ती जा रही है, त्यों त्यों उसका अहभाव तीव्र से तीव्रतर और व्यापक से व्यापकतर रूप ग्रहण करता चलता है 6. इस स्व अस्तित्व

बोध का ज्ञान आज नारी वर्ग और निम्नवर्ग को विशेषतः हुआ है क्योंकि इन्हीं दो वर्गों के अस्तित्व को समाज ने नगण्य मानकर अस्तित्व हीन समझा था, किन्तु आधुनिक परिस्थितियों में ये दोनों होस्व अस्तित्व बोध की भावना से ग्रसित होकर नई मानसिकता के साथ दिखायी दे रहे हैं। देवयानी का कहना है, कि नायिका देवयानी स्वअस्तित्व की भावना से प्रेरित होकर अपने पति से कहती है "साधन अपनी इच्छानुसार अपनी बब बीबी को पैर की जूती वगैरह समझता था तो गण्डा या गया से कोई लड़का ले आते मैंनें जो किया ठीक किया उसकेई कोई गल्तीनहीं की, 7. इतना सुनकर साधन का पति अहं भाव उभरकर जाता है तो देवयानी उसको त्यागने को तैयार हो जाती है इस प्रकार प्रस्तुत नाटक में देवयानी और साधन में परस्पर अस्तित्वका संघर्ष कर उभरता है। डा० लालका नाटक कजरीवन की नायिका मजरी पतिद्वारा त्याग दिये जाने पर गांव कीऔरतों के व्यंग्य बाण सहतीहै, और जब उसका पति आता है तो उसका स्वाभिमान जागृत हो उठता है। 8. वह स्व अस्तित्व की भावना से सम्पन्न नारी है इसी प्रकार स्वअस्तित्व की भावना से प्रभावित दरिन्दे की नायिका रति कहती है मैं उनस्त्रियों में नहीं हूँ जो अपनेशरीर को फीडिंग बाटल बना देती है 9. इस प्रकार आधुनिक शिक्षित नारी अपने अस्तित्व के प्रति उत्तरोत्तर जागरूक होती जा रही है, अपने विकास में बाधक हो रहे मर्यादा मूल्यों तथा परम्पराओं को तोड़ रही है सुनो शेफाली नाटक कीहरिजन युवती शेफाली उच्च वर्ग के बकुल व उसके पिता दीक्षित जी के सामने अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए झुकना स्वीकार नहीं करती बल्कि विवाह करने पर इन्कार कर देती है। क्योंकि बकुल के पिता निम्नवर्गीय शेफाली की आड़ में चुनाव जीतना चाहता है, शेफाली बकुल के पिता की चाल से परिचित है। इसलिए अपनेको वह राजनीति का मोहरा नहीं बनने देती। दीक्षित की स्वार्थपूर्ण समाज सेवा

के लिए कहती है। वह क्यों शादी करना चाहते हैं, मुझसे अभी--इसी वक्त ------मैं खूब समझती हूं बाप बेटा अपनी समाज सेवा की हथेली पर सरसों जमाना चाहते हैं। 10. इसी प्रकार "तीसरा हाथी" में रोशन स्वअस्तित्व की भावना से ग्रसित होकर अपने पिता को सम्बोधित करते हुए कहता है, "आपकोकोई अधिकार नहीं कि मेरे बीच में आयें---------मैं जहां रहता हूं वहां कोईमुझसे प्यार करती है, यह मत समझिये किआपसे पूछ रहा हूं तो आपकेआशीर्वाद से ही जीवन ढोऊंगा। 11. इसी प्रकारतीसरा हाथी का नायिका विभा अपने पिता के [illegible] अत्याचारों उनकी तानाशाही से दुःखी होकर अपने प्रेमी अमित से विवाह करने का प्रस्ताव रखी है वह अपने प्रेमी से कहती है "मैं अमित उनकी तेरहवीं से पहले शादी कर लूंगी। इस घर की सीनियारटी इस घर की प्रतिष्टा सबको ताखमें रख दूंगी, 12. इसीप्रकार स्वअस्तित्व बोध से प्रेरित होकर प्रतीक नाटकों में कुत्ते, बामाचार, उत्तर उर्वशी, खलापोलमपुर, करफ्यू, टावर, राम की लड़ाइ, आदि नाटकआते हैं।

स्वतन्त्रता किप्रति नये दृष्टिकोण:-

समकालीन प्रतीक नाटकों की नारी व्यक्तित्व व नवीन चिन्तन से अभिप्रेरित है अब वह पुरुष सापेक्षनहीं है आधुनिक समाज में जो मूल्य संक्रमण की स्थिति दृष्टिगोचर हो रही है उसका एक मुख्यकारण है स्वातन्त्र्य भावना, बिना दब दीवारों के घर की मीना तथा सादरआपका की लज्जावती इसी कोटि की नारी है जो पति की अपेक्षा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को अधिकमहत्व देती है वह अपने जीवन में शारीरिक तथा भौतिक सुखों को प्राप्त करना चाहती है। उनके इस भौतिक वादीचिन्तन ने परिवारमें अलगाव अजनबीपन, तथाकुंठित तत्वों को उत्पन्न कर दिया है। लज्जावती अनैतिक ढंग से नौकरी और उन्नति प्राप्त करतीहै। 3. देवयानी का कहना है कि नायिका देवयानी परम्परागत भारतीय परिवार, दाम्पत्य जीवन तथा पति पत्नी के सम्बन्धों को नकारती है, वह परम्परागत नारी के रूप

---137

को उपहास की दृष्टि से देखती है, दरिन्दे नाटक की नायिका रति अपनी नेचुरल उर्जा को प्राप्त करने के लिए पुरूष साथ चाहती है ।4. उत्तर उर्वशी की नायिका मोना पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित स्वतन्त्र विचारों की युवती है, आधे-अधूरे की सावित्री पति से असन्तुष्ट होकर कई पुरूषों से सम्बन्ध स्थापित करती है । इस प्रकार समकालीन युग के नाटकों की नारी घर की चारदीवारी के समिति दायरे से निकलकर विस्तृत क्षेत्र में निकल आयी है ।

4. स्वच्छन्द यौन चेतना:-

पश्चिमी सभ्यता के संक्रमण के कारण जहाँ सामाजिक जीवन के विविध क्षेत्रों में बदलाव आया है वहीं पर यौन सम्बन्ध भी इस सभ्यता के संक्रमण से अछूते नहीं रहे, स्वच्छन्द प्रेम, और सामाजिक विघटन के प्रति नारी में अंकुरित विद्रोह का चित्रण समकालीन हिन्दी नाटककारों ने बड़ी बारीकी से किया है । द्रौपदी, सूय की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, तेंदुआ, आधे-अधूरे, एक और अजनबी, सादर आपका, नरमेध, द्रौपदी, अपनी पहचान, आदि नाटकों में सामाजिक यौन विकृतियों में सुख को खोजते हुए स्त्री पुरूष के चरित्र को उभारा गया है । आध्यात्मिकता से कटकर भौतिकता से जुड़ी हुई आज की भूखी पीढ़ी शरीर को अपना साधन बना रहीहै । अब तक पुरूष वर्ग द्वारा अपेक्षित नारी जिसे समाज में उचित स्थान नहीं मिल पाया था वह जागृति की नई लहर के साथ घर की चहर दीवारी से निकलकर बाहरआगयी है । आज की नारी पुरूष की कठपुतली मात्र न रहकर पुरूष के कन्धे से कंधा मिलाकर चल रही है । धार्मिकनैतिक मूल्यों से विमुख आज के नाटकों की नारा अतृप्ति लिए जहां किसी तीसरे पुरूष का तलाश में भटक रही है, वहां पर पति-पत्नीके सम्बन्ध भी शुष्क बनतेजा रहे हैं ।

"सादर आपका" की लज्जावती स्वयं कहती है "मुझे एम. ए. करने

के 15 दिन के भीतर नौकरी मिलनी थी, छः महीने हो गये । प्रत्युत्तर उसकी बेटी लज्जावती के असलियत का उदघाटन करते हुए कहती है "औरत क्या नहीं कर सकती, वह तुम्हारी तरह नौकरी पा सकती है । प्रमोशन पा सकती है, प्रमोशन 15. वामाचार में मिस पदमा नौकरी प्राप्त करने के लिए शरीर को माध्यम बनाती है, लगातार तीन बार आपके साथ सिनेमा देखने जाना पड़ता था, और दो बार आपके बिस्तर पर रात बितानी पड़ी थी, तब कहीं जाकर नौकरी हासिल हुई है 16. समकालीन समाज में पति-पत्नी का अन्य व्यक्तियों के साथ स्थापित किये गये सम्बन्धों को प्रगतिशीलता का लक्षण माना जाता है । उत्तर उर्वशी नाटक में मोना उसके पति प्रकाश के माध्यम से इसी तथ्य को उजागर किया गया है । प्रकाश अपनी पत्नी मोना को लेखक के पास ले जाता है, जिससे उसे धन की प्राप्ति हो ।

प्रकाश:-
======= तू ही क्यों नहीं फांस लेती इसे ? पैसे की क्या जरूरत है ?

तू यहां क्या करने आयी है ? साली कुतिया ?

17. एक और अजनबी में शानी का पति जगमोहन जब अपने व्यक्तित्व के माध्यम से प्रमोशन नहीं पा सका तो शानी को तैयार करता है क्योंकि उसे ज्ञात हो जाता है, कि उसका बास उसकी पत्नी का प्रेमी रह चुका है, इसलिए जगमोहन अपने बास इन्दर को "डिनर" पर आमन्त्रण करता है, और दोनों को एकान्त में छोड़ने के उद्देश्य से कहीं चला जाता है, आधुनिक परिवेश में पति-पत्नी तीसरे व्यक्ति को सहजता से स्वीकार कर रहे हैं ।

उत्तर उर्वशी में स्त्री पुरूष की स्वच्छन्द यौन प्रवृत्ति का वर्णन किया गया है ।

आधे-अधूरे नाटक में नाटककार ने यौनजनित कुंठा को बखूबी से उभारा है महेन्द्र लिज लिजे स्वभाव का आत्म विश्वास हीन है, और

उसकी पत्नी सावित्रा उससे असन्तुष्ट है, और सेक्स की अतृप्त भावनाओं को तृप्त करने के लिए पर पुरुषों का सहारा लेती है, सावित्रीका प्रेमी उसकी बेटी को ले भागता है छोटीलड़की बाल्यावस्था में यौन सम्बन्धी-जानकारी हासिल कर रही है, तो लड़का अशोक फिल्मी अभिनेत्रियों को तस्वीरे काटता है, और अश्लील पुस्तकों में यौन तृप्ति खोजता है। इस प्रकार कामकुंठा से खण्डित, विश्रृंखलित परिवार एक दूसरे से अजनवी त्रस्त प्रेम शून्य व्यक्तियों की स्थलीबनकर रह गया है। द्रौपदी नाटक में उच्चश्रृंखल सैक्स के धरातल पर भाई बहन, पति-पत्नी, मां बेटी, और पिता बेटीके बदलते दृष्टिकोण चित्रित किये गये हैं। परिवार के बीच सौहार्द, मर्यादा, अपनत्व, जैसा कोई भाव नहीं दिखायी देता आनल अपनीबहन अलका की वास्तविकता बदलातेहुए कहता है, कि "जरा इसका पर्स खोलकर देखो, रिट्ज के बाक्स की दो टिकटें हैं दोपहर के शो की, वहां है इसकी किलास सोसियोलोजी नहीं, सैक्सोलोजी की।19. पिता-पुत्री के स्वच्छन्द आचरण को देखकर कहता है, कि "छह महीनों में सिर्फ ब्लाउज केबटनों तक पहुँच सका। सुरेखा बौखलाकर तुम्हें शर्म नहीं आती? इस तरहबोलते हो अपनी बेटी केलिए।

मनमोहन: मुग्ध दृष्टिसे उधर देखता है" खोया सा वो मेरी बेटी नहीं है,

20. आधुनिक नारी शारीरिक सुख के आधार पर पति, वैवाहिक सम्बन्ध व मर्यादा आदर्श, आदि को नकार रही है। वह पति की शारीरिक व मानसिककमजोरियों को भाग्य कहकर स्वीकारनहीं करती, अपितु शारीरिक इच्छा को स्वाभाविक प्राकृतिक अधिकारघोषित कर अन्य के साथ सम्पर्क-स्थापित कर लेती है। सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण नाटक की नायिका शीलवती के माध्यम से इसी आधुनिक तथ्य को उदघाटित किया गया है। रानी शीलवती नपुंसक पति राजा ओक्काक से राज्यका उत्तराधिकारी प्राप्त न कर सकने के कारण अमात्य परिषद द्वारा एक रात

के लिए उपपति चुनने को विवश हो जाती है । उप-पति के लिए बाल सखा प्रतोष का चुनाव कर शारीरिक सम्बन्ध स्थापितकरती है, और उस एक रात के पश्चात सामाजिक मर्यादाओं, मान्यताओं, अच्छे आदर्श व वैवाहिक सम्बन्ध पर प्रश्नचिन्ह लगाता है । शारीरिक सुख के लिए उन्हें महत्वहीन घोषित कर देती है, "निभाइ है मैंने ——और पांच वर्ष तकमर्यादा निभानेमें उतना सन्तोष नहीं मिला जितनी तृप्ति एक रात में मिली है, —— बोलेकिसे मानूं । किसको दूं महत्व ? 21. फ्रायडवादी मनोवृत्ति से प्रभावित वैयक्तिक आधारित चेतना पर यौनसम्बन्धों को आधुनिक व्यक्ति की आवश्यकता कहकर स्वीकारकिया गया है । वामाचार नाटक में इस प्रवृत्ति को उदघाटित किया गया है । नाटक में " पाजीटिव" किसीके भी स्थापित शारीरिक सम्बन्धों को बिल्कुल सहज व स्वाभाविकमानता है । क्या है गलत? यहसैक्सगलत है? खुले बाल गलत है, मेरे सफेद कपड़े गलत है, यदि ये गलत नहीहै, तो तुम्हारा मेरे बिस्तर पर लेटना गलत नहीहै । 22. देवयानी काकहना है, नाटक में नारी कीबदली मानसिक स्थितियों मान्यताओं कावर्णन किया गया है । देवयानी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता व सेक्स के आधार पर अनेक पुरूषों के सेक्स के आधार पर अनेक पुरूषों के सम्पर्कमें आती है, उसका सिद्धान्त है कि "वन स्पल इज नाट इन अफ फार द लाइफ टेस्ट मोर " । 23. घरौंदा नाटक में छाया अपनी पारिवारिक स्थितिको उदघाटित करतेहुए कहती है, "तुमनहीं जानते सुदीप जब कभी रातको नींद खुल जातीहै, तो मेराशराबी भाई मेरी भाभी के साथ —— उफ ——— वह छीना झपटी । रोंगटे खड़ेहो जाते हैं, मेरे 24. इसी प्रकार चारपाइ नाटक मेंभी आवासीय समस्यासे उद्भूत कुंठित यौनसम्बन्धों का चित्रणकिया गया है । डा० लाल के "कजरी वन" में भी इसी तथ्य को उभारागया है । उच्च जाति के लोग निम्न जाति की कजरी से भेद भाव

रखते है । परन्तु शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करनेमें कोइ हिचक नहीं रखते सूर्यमुख में कुछऐसे प्रसंगों की अवतारणा हुई है, जो प्रेमके साथ साथ शारिरिक भोग के स्तर पर यौन कुंठा और काम सम्बन्धों को कुरेदते हैं । सुरेन्द्रवर्मा का आठवाँ सर्ग नाटक में पात्रों के वार्तालाप क्रममें यौन प्रसंगो की कई इंगितियाँ उभरती है, अनसूइया जब आहार देने के सिलसिले में सारिका द्वारादंतक्षत की गयी अपनी एकउंगली की ओर संकेत करती है, तो प्रियवंदा उससे कामोत्तेजक परिहास में कहती है "ब्याह केबाद बड़ी आसानी रहेगी अगर अभी से दंतक्षत का अभ्यास हो जायेगा तो 25. सैक्स और यौन चेतना कोलेकर जिन नाटकों का प्रणयन इस काल में हुआ उनमें मणिमधुकर कातीसरी और दुलारी बाई, दया प्रकाश सिन्हा, का सादर आपका मुख्य हैं । दुलारी बाइ के द्वारा दर्शक वेश्यामनोवृत्ति की नग्नता का सहजबोध कर पाने में समर्थ है । मणिमधुकर का नाटक खेलापोलमपुर में परायी औरतों के साथ जल्लादों का सहवास तथा प्रेमके सम्बन्धमें उनके विचार उनकी विकृत यौनेच्छा का परिचारक है । 26. प्रस्तुत नाटक में रानीफूल कुंअर अतृप्त= अतृप्त यौन की कुंठा में डूबी हुइ कुण्ठित नारी चरित्र का प्रतिनिधित्व करती है । इसी नाट्य श्रृंखला मुं हमीदुल्लाह कादरिन्दे, डा. लालकाकप्पू कर्प्यू, मुद्राराक्षस, का तिलचट्टा, तथा यासिफ़ुल्ली आदि नाटकभी हैं । मुद्राराक्षस का तेंदुआ नाटक विशिष्ट यौनसम्बन्धों कोअभिव्यक्ति देता है । प्रस्तुतकृति में ऊँचे पदाधिकारी को पत्नी रेनूराय को एक जंगली बूट आदमी की जरूरत है उसे बोरे का रूखा खुरदरा स्पर्श यौन जनित गहरी सन्तुष्टि देता है । यहस्पर्श उसे बूट बेहशी आदमी के स्पर्श सा लगता है । इसीप्रकार मिसेज मदान को तलाश रहती है एक बदबूदार गन्दे आदमी की दोनों कामुक स्त्रियाँ माली कीराम की खाल पर जलतीहुईमोमबत्ती टपकाती हैं ।

बोल्टेज वाले तार का सिरा नाभि से लगाती है, तो कभी उंगली दांतों के बीच दबाती है, और उसे चाटामारकर कामोत्तेजना को जागृत करती है।

इसप्रकार हिन्दी नाटकों में विकृत मनोवृत्तियाँ स्वच्छंद यौन चेतना के रूप में उभरकर आयी हैं, समकालीन प्रतीक नाटकों में निजी पहचान के साथ चरित्रों के मनोवैज्ञानिक स्तर पर प्रस्थापित करने की पद्धति प्रमुख हो गयी है।

5. नैतिक एवं धार्मिक मूल्यों के बिखराव:-

समकालीन प्रतीक नाटकों का युग राजनैतिक उथलपुथल तथा नैतिक धार्मिक तथा सामाजिक मूल्यों के विघटन का युग है, आज का विज्ञान की क्रान्तिकारी खोजों, अद्भुत एवं विलक्षण आविष्कारों और उपलब्धियों के कारण जीवन और जगत सम्बन्धी मान्यताओं में परिवर्तन आया है। आध्यात्मिकता के स्थान पर भौतिकता का साम्राज्य है उक्त परिप्रेक्ष्य में जब हम समकालीन नाटकों का अवलोकन करते हैं तो हमें नैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में हो रहे विघटन का आभास होता है। समकालीन नाटकों में राष्ट्र की धर्म निरपेक्षता का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है क्योंकि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात हमारे देश में धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में घोषित किया गया था। यद्यपि धार्मिक रूढ़ियों और अन्ध विश्वासों के प्रति आक्रोश प्रसाद पूर्व भी नाट्यकारों द्वारा प्रकट किया जाने लगा था। परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात नैतिक एवं धार्मिक मूल्यों के विघटित स्वरूप को लेकर जो नाटक हमारे सामने आये उनमें से उत्तर अब उर्वशी देवयानी का कहना है, कि सादर आपका, वाह रे इन्सान, दरिन्दे, कुत्ते, ओम अभिषेक, तेंदुआ, पागलघर, तीसरा हाथी, कर्फ्यू, चिराग की लौ, द्रौपदी आधे अधूरे, आदि प्रमुख है, बौद्धिकता तथा शिक्षा के प्रचार प्रसाद के कारण

आये नये जागरण नेधर्म के प्रति नये दृष्टिकोण को जन्मदिया जिसके कारण नैतिक मूल्यों में भी परिवर्तन आया। पीली दोपहर नाटक में डा० सुधांशु पूर्व जन्म के पाप पुण्य को बेफजूल मानता है 27. न धर्म न इन्सान ईमान, नाटक में दिनेश आधुनिक तर्क केआधार पर ईश्वर वउसकी सत्ताको काल्पनिक मानताहै, औरईश्वर को मनुष्य से गौड़ मानता है 28. इसी प्रकार कायाकल्प नाटक में समाज के ठेकेदार धर्माचार्यों पन्डितों, आदि आडम्बरों व षडयन्त्रों के प्रति विद्रोह को व्यक्त कियागया है। कावरा खड़ा बाजार नाटक में प्राचीनकाल से चले आ रहे बाह्याडम्बरों अन्धविश्वासों तथा पाखण्डों को उभारा गया है, चिरागकी लौ नाटक में तारा, रानी, जयन्त, तथा गिरीश, आदि पात्र भौतिकता के समक्ष आदर्श व नैतिकता को नकारते हैं। 29. अत: किम नाटक में तस्कर ने अर्थके आधार पर देशप्रेम आदर्श संस्कार, इमानदारी, प्रेम आदि के आचारों विचारों को झुठलाता है, वह अपनी भाभी रत्ना से कहता है, "बेईमानी झूठ धोखेबाजी, खराब चीजे नहीहै, और तो उनसे ज्यादा बुरी चीजेहैं सच्चाई और ईमानदारी ये जिन्दगी के बहाव कोरोकतीहै, और पकड़कर बाधती है आज कीनारी प्रमोशन तथा पोस्ट के लिए शील, चरित्र सतीत्व और जैसे नैतिकमूल्यों को बड़ी सरलता से छोड़ सकती है। जहां परवामाचार की मिस पदमा "सादर आपका" की लज्जावती बौद्धिकता से प्रभावित होकर धार्मिक विश्वासों को खोखला साबित कर रहीहै वहीं पर उत्तर उर्वशी की नायिका मिसमोना शारीरिक सुन्दरता केआधार पर लेखक कोअपने चुंगुल में फंसा लेती है 30. इससे साफ स्पष्ट है कि बिखरते हुए नैतिकमूल्यों ने धार्मिक रीति रिवाजों तथा नैतिक मूल्योंको जड़ मूल्य से धराशायीकरदिया है। घरौंदा नाटकमें सुदीप अपनी प्रेमिका छाया को मृत्यु का इन्तजार कर रहे मिल मालिक मोदी के साथ विवाह करने को कहता है जिससे उसकी मृत्यु के बाद उसका घर व धन उसे

मिलजाय, वह कहता है" भावनाको ताक पर रखकर, संस्कारों का बोझ उतारकर और नैतिकता के माथे पर लात मारकर हर काम सावधानी से करता है, 31. इसी प्रकार"चारपाई" नाटक मेंआवास समस्या से जूझते हुए ऐसे परिवार की दास्तान है जिसके धार्मिक एवं नैतिक मूल्य टूटकर बिखर चुके है मरजीवा,राम की लड़ाइ, दरिन्दे, मि. अभिमन्यु, सम्भवामि युगे-युगे, शुतुर्मुर्ग, सिंहासन खाली है, बकरी, आदि नाटकों में भ्रष्ट राजनीति के साथ साथ, प्रेम सौहार्द, भाईचारा, परोपकार, देशसेवा, कर्तव्य जैसे नैतिक मूल्यों कीबार बारहत्या हुई है । ब्रम्ह चर्य, संयम जैसे सदाचार का तो इन नाटकों में कहींस्थान ही नहीं है, शुतुर्मुर्ग नाटक में शुतुर नगरीका राजा एक लम्बे अर्से के बाद सत्यमेव जयतेके झूठे नारे द्वारा जनहित को लक्ष्य कर शुतुर-प्रतिमा का निर्माणकरता है, पर एक लम्बी अवधि के बाद भीवह प्रतिमा निर्मित नही हो पाती इस प्रकार समकालीन प्रतीक नाटकों में राजनैतिक लक्ष्य हीनता नेताओंकीशुतुर्मुर्गी प्रवृत्ति, धांधलेबाजी, खोखले, आदर्शों का खुलकर चित्रण हुआ है, इस प्रकार सांस्कृतिक दृष्टि से शाश्वत आस्थाओं का प्रश्न, धर्म, अनास्था नैतिकता, दृष्टिभेद, और साम्प्रदायिक संघर्षों की अभिव्यक्ति इन नाटकों का प्रतिपाद्य है । प्राचीन काल में ईश्वर, धर्म, नैतिकता, सदाचार, स्वर्ग, नरक, संस्कार, नियति,जाति, विवाह, दाम्पत्य, पाप, पुण्य, मनुष्यता के टिकने का आधार थी परन्तु समकालीन प्रतीक नाटकों नेइन्हें पूरी तरह से नकार दिया है।

6. परम्पराओं के प्रति नये स्वर:-

प्रतीक नाटकों में परम्परिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह तथा नवीन विचारों, धारणाओं औरों समस्याओं कोप्रस्तुत करने आग्रह दृष्टिगोचर होता है। इन नाटकों में समाज परम्परा,स्त्री, पुरूष, सम्बन्ध, अर्थ एवं संस्कृति,के प्रति व्यक्त विचारों में स्पष्ट रूप से नवीनता के दर्शन होते हैं । इन नवीन विचारों के प्रस्फुटित होने का

चूंकि मूलभूत कारण नवीन युग की वैज्ञानिक उपलब्धि है जिससे परम्परागत जमींदारी प्रथा जातीयता, दहेज प्रथा, एवं वर्गवाद का भी परिवर्तित सन्दर्भों में चित्रण हुआ है। वैज्ञानिक विकास के कारण पारिवारिक विघटन असन्तोष स्नेह हीनता, और सम्बन्धों की अयावहता, बढ़ी। पति-पत्नी बास कर्मचारी, भाई-बहन, प्रेमी, प्रेमिका, के सम्बन्धों में नवीन दृष्टिकोण अपनाया गया है। ~~इसका~~ जिसका एक गहरा आघात परम्पराओं पर पड़ा। जिसके फलस्वरूप हमारी प्राचीन परम्पराओं को सन्देह की दृष्टि से देखा जाने लगा। शिक्षा वैज्ञानिकता और औद्योगीकरण आर्थिक संकट आवास समस्या और विदेशी सभ्यता के अंधानुकरण से प्रभावित समाज प्राचीन काल से चली आ रही सामाजिक परम्पराओं के प्रति विद्रोह करने लगा आधे अधूरे सूर्यमुख, चिन्दियों की झालर, वामाचार, घरौंदा, राजरानी, कर्फ्यू न धर्म न ईमान, अतः किम उत्तर उर्वशी ओह अमेरिका, पीली दोपहर, माटाजागरे है, द्रौपदी, सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक कुत्ते आदि ऐसे प्रमुख नाटक है, जिनमें परम्पराओं के विघटन के साथ साथ नये स्वर की नाटकमें अभिव्यक्ति हुई है, आधे अधूरे नाटक में सावित्री और महेन्द्र नाथ के सम्बन्धों की कडुआहट महानगर, के मध्यम वर्गीय परिवेश की कडुआहट है, पति महेन्द्र नाथ व्यापार में सब कुछ गंवा चुका आधा अधूरा है जो अपने परम्परागत निरंकुश एकाधिकार पर चोट खाकर सावित्री को बुरी तरह मारता है, कपड़े फाड़ देता है, और गुसल खाने में ले जाकर कमोड पर सम्भोग करता है, और सावित्री के पुरुष मित्रों के आने पर खिसक जाता है। ऐसे माहौल में पलने वाली बड़ी लड़की को लगता है, कि वह चिड़िया घर में रह रही है, विष्णु प्रभाकर का युगे-युगे क्रान्ति तथा "टगर" भारतीय समाज के वैवाहिक सम्बन्धों में पीढ़ी दर पीढ़ी से हो रही परिवर्तन संक्रान्ति का सफल नाटक है, "टूटते परिवेश" की मुख्य चिन्ता जनरेशन गैप की है। सूर्यमुख

पुराण कथा, के माध्यम से युग बोध को ध्वनित करता है कृष्ण पुत्र प्रद्युम्न विमाता वेनुरति से प्रेम करता है, उसके लिए कुलपरम्परा, जाति मर्यादा का कोई महत्व नही है, वह घरेलू सदस्यों के विरोध करने पर वेनुरति को लेकर एक नये धर्म, नई परम्परा और नये मनवन्तर, की स्थापना करना चाहता है। इसी प्रकार न धर्म, न ईमान की कथ्य चेतना पारिवारिक सम्बन्धों और परम्पराओं के विघटन पर आधारित है चिड़ियों का एक झालर में आज की नयी पुरानी पीढ़ी के काम सम्बन्धीउत्त मानसिक टकराव को उपस्थित करता है जिसमें माता पिता एवं पुत्र का चरित्र नैतिक पतन की ओर जाते हुए भारतीय परम्परा और परिवेश को नकारता है। वामाचार में बदलतेहुएमूल्यों के कारण बदलती हुई परम्पराओं पारिवारिक रिश्तों को नवीन दृष्टिकोण से अभिव्यक्त किया गया है अतः बिम्ब नाटक में ईमानदार मनोहर उसकी सीमित आय से अपने घर का खर्चनहीं चला पाता, वहीं पर उसका चचेरा भाई वीरेन तस्करी द्वारा लाखों रुपयाकमाता है, और भोगविलास में लिप्त रहता है तथा धन के बल पर देश के कानून तक को खरीद कर अपनी मुट्ठी में रखता है। यह सब देखकर मनोहर को ईश्वर के प्रतिअनास्था उत्पन्न हो जाती है, और वह कहता है "बहुत भरोसा किया मिला क्या? मिला ईश्वर के नाम पर पत्थर का टुकड़ा, मिली मिट्टी की मूर्ति, मिला दीवाल या कागज पर खींचा गया चित्र एक पक्षी, एकमछली, एकसांप, ईश्वर से बड़ा झूठ और नहीं रहा" 32. सूर्य की किरण तक सूर्य की पहलीकिरण से सूर्य की अन्तिम किरण तक की नायिका शीलवती विद्रोही बनकर सामाजिक परम्पराओं को नकारती है 33. तथा सन्तान को गौण उत्पादन तथा तलहटी की छाछ समझती है। इसी प्रकार कर्फ्यू के पात्र समाज द्वारा लादेगये नैतिक बंधनों कोतोड़ने कीकोशिश करते है डा० दया शंकर शुक्ल के शब्दों में " संजय, कविता, गौतम और मनोरमा

ने समाज द्वारा आरोपित करर्फ्यू को तोडकर नइक्रान्तिकारी मान्यतायें स्थापित की है, ये मान्यतायें जीवन के रहस्यों को खुली किताब की तरह रख देती है 35. ओर अमेरिका मैं बुद्धि का प्रतीक विवेक नामक पात्र पंण्डित से कहता है, "अंग्रेज सात समुन्दर पार आ गये उनका धरम नहीं बिगड़ा तुम्हारा धरम घर बैठे बिगड़ जाता है 36. इसी प्रकार न धर्म न ईमान का पात्र दिनेश भी प्राचीन मान्यताओं को नकारता है । रिश्तों में परस्पर बिवाह नहीं हो सकते । किन्तु इस प्रथा को गलत सिद्ध करते हुए कहता है, कि इसप्रकार "माटीजाग रेक्षपास के फूल, भूमि की ओर, पहला विद्रोही, आदि नाटकों में ग्रामीण जन में व्याप्त नवीन चेतना तथा नये चिन्तन को अभिव्यक्त कियागया है ।

आधुनिक परिवेश में पली नारी रूढ़ सामाजिक परम्पराओं एव मान्यताओं को तोड़ रही है, कुछ समय पहले वैधव्य नारी के लिए सबसे बड़ा दुर्भाग्य व कलंक माना जाता था परन्तु आज ऐसा नही है "वामाचार" नाटक में पत्नी कहती है, आखिर मर गया शायदअच्छा ही हुआ उसेमरना ही था, लेकिन दूसरी जिन्दगी शुरू करने से पहले इस तरह फिजूल विधवा होने के दुख से बाहर आना होगा 37. इसी तरह सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक की नायिका शीलवती समस्त आदर्शों एवं सामाजिक मान्यताओं को पुस्तकीय घोषित कर देती है, 38. दरिन्दे नाटक की नायिका रति कहती है, "पति के शव के साथ सती हो जाना या अपनी इच्छा के खिलाफ किसी दूसरे का इच्छा परचलना बलि है । 39. पुरानी पीढ़ी जिन आदर्शों संस्कारों औरशिष्टाचार कीमान्यताओं की अपेक्षा रखी है, उन्हें युवा पीढ़ी के आचरणों में न पाकर आक्रोशित और व्यथित हो उठता है । दारन्दे नाटक कीबूढी अपने मन का उबाल व्यक्त करते हुए कहती है, "काहे हे भगवान कइसन कलयुग आय गवा है 9

बेटा बाप से सिगरेट मांग के पिये लाग है । हमार तो कुछ समझ में नहीं आवत" 40. इसी प्रकार तीसरा हाथी में विशा सोहन, और रोशन जो युवा पीढ़ी के पात्र हैं, अपने पिता की तानाशाहीऔर कठोर अनुशासन से तंग आकर उपेक्षा का भाव रखते हैं, औरपिता की मृत्यु हो जाने पर जश्न मनाने की भी कल्पना करते हैं 41. महानगरीय जीवन की आपाधापी आर्थिक विषमता और आवास समस्या नेभी सामाजिक रीति रिवाजों मान्यताओं तथा परम्पराओं आदि को प्रभावित कियाहै, घरौंदा चारपाई, आधे-अधूरे, पूर्णविराम, बसन्त परिहार, आदि कई ऐसेहीं नाटकों में इन्हीं समस्याओं से पराजितहोती सामाजिक मान्यताओं का चित्रण कियागया है ।

कुत्ते नाटकमें मिस्टर कपूर, मिसराका, से कहताहै, "अब पुरानी परम्परायें टूटनी हीचाहिए, ----यही भी कोई बात है, कि जिससे शादी की उसी से बंधे रह गये ।

---- समय के साथ साथ सब कुछ बदलते रहना चाहिए42. डा. लक्ष्मीनारायण लाल का अब्दुल्ला दीवाना नाटक में दो नारी पात्र हैं । स्त्री और युवती । स्त्री आधुनिक प्रेमिकाके रूप में है । उसके लिए सांस्कृतिक पुरातन परम्पराओं में मर्यादित नारी का देवी स्वरूप मजाक की वस्तु बन गया है वह एक धनाढ्य पुरुष की प्रेमिकाहै, और अपने प्रेमा पक्स्टकाजन एवं एक पुलिस की सहायता से अपने प्रेमी से इश्क करती खूब पैसा ऐंठती है ।

इस प्रकार इन नाटकों में जीवन परिवेश के धरातल पर सामाजिक जीवन की गतिविधियों, आकांक्षाओं रीति रिवाजों प्रथाओं परम्पराओं आदि के प्रति स्वस्थ जीवन की परम्परा का परिचय देता है ।

सामाजिकजीवनमें विद्रूपताओंकी नई दिशायें:-

समकालीन युग में बढ़ती हुई मंहगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, आर्थिक विषमता, स्वच्छंद यौनवृत्ति, दाम्पत्य जीवनके बीच संघर्ष आदि की स्थिति को पाकर व्यक्तिअधिक कुंठाग्रस्त तथा तनावयुक्त हो रहा है, और इसके साथ साथ वह सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक, आदि जीवन मूल्योंको अस्वीकार कर रहा है सम सामयिक प्रतीक नाटकों में तेंदुआ, कुत्ते, चिलचट्टा, मादा कैक्टस, मिस्टर अभिमन्यु, चिराग की लौ, करफ्यू, उत्तर उर्वशी, अतः किम्, घरौंदा, एक और- द्रोणाचार्य, असुर सुन्दरी, रक्त कमल, लहरों के राजहंस, आधे अधूरे, रात रानी, रस गन्धर्व, सेतुबन्ध, सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण, दरिन्दे, मरजीवा, तीसरा हाथी, अपने अपने, खूंटे, कलंकी, हत्या एक कुत्ते की, उलझी आकृतियाँ, चारपाई, त्रिशंकु, द्रौपदी, सूयमुख, बकरी, आदि अन्य अनेक नाटकों में उच्च वर्ग, मध्यमवर्ग, तथा निम्नवर्ग के स्तर की मानसिक कुंठाओं, को अभिव्यक्ति मिलती है। पाश्चात्य सभ्यता तथा स्वच्छंद यौन चेतना से प्रभावित परिस्थितियों में जी रहे, उच्च वर्ग, की मनःस्थितियों में चित्रण, तेंदुआ, नाटक में किया गया है। तेंदुआ का मिसिज रेनूराय लिज किसे साष्टअपने पति से ऊबकर कुछ रफ पाना चाहती है। वह काम भावना से इतनी त्रस्तहै, कि माला की असहनीय पीड़ा से भी उसे सैक्स की उत्तेजना दृष्टिगोचर होती है। मिसेज मदान काम कुंठित होकर माली की जांघ पर मोमबत्ती पिघलाकर अपनी तृप्ति करती है। 43. सूर्य की अन्तिम किरणसे सूर्य की पहली किरण तक" की रानी शीलवती अपने नपुंसक पति की शारीरिक सुख के आधार पर उपेक्षाकरती है। वह प्रतोष के सम्पर्क के=अ आने के बाद ही अपने पूर्ववर्ती स्वभाव व तनाव कुंठा के विषय में जान पाती है "उसके एक ही स्पर्श से भड़क उठा यह लावा

जो कितने सालों से इस शरीर में दबा हुआ था ——— किसकी आँच का अनुभव होता था जब तो कहीं कुछ नहीं भाता था ——— बिना बात महत्तारिका पर झुँझलाती थी, ——— बेचारे चक्रवाक को आहार नहीं मिलता था, चित्रलिख फाड़कर फूँकती थी, दुतरागमों में वीणा के तार टूटते थे, बेचैन सी शैया पर करवटें बदलती थी, "पंजा बढ़ाते हुए और जान लो कि तुम्हारा मुँह नोच लेने को मन होता था 44. लहरों के राजहंस के पात्र सुन्दरी और नन्द दोनों अलग-अलग स्तर से मानसिक तनाव व कुंठा से ग्रस्त हैं सुन्दरी अपने रूप यौवन के गर्व से नंद को उलझाये हुए है तो नन्द सुन्दरी की कामवासना और बुद्ध की बैराग भावना के बीच तनाव ग्रस्त है। इन नाटकों के अतिरिक्त वाह रे इन्सान, दरिन्दे, उत्तर उर्वशी, मरजीवा आदि नाटकों में उच्च वर्ग की सैक्स कुंठा के कारण टूटते दाम्पत्य, तनावग्रस्त, अलगाव, आदि पीड़ित व्यक्ति का चित्रण किया गया है। मिस्टर अभिमन्यु नाटक का राजन अफसरशाही वर्ग का प्रतीक है। वह अपनी ओर पर त्याग-पत्र देने की इच्छा प्रकट करके नौकरशाही अव्यवस्था के प्रति आक्रोश व्यक्त करता है, त्रिशंकु नाटक में भी बेरोजगार डबल एम.ए. पास युवक की विवशता मानसिक कुंठा और तनाव को उदघाटित किया गया है। वह डिग्री तक फेंकने के लिए तैयार हो जाता है। इसी प्रकार से आधे-अधूरे का युवक अशोक भी बेरोजगार है, वह कुंठाग्रस्त होकर यौन सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ता है, "पेपरवेट" नाटक का "लड़का" पात्र बेरोजगारी से त्रस्त है, परन्तु वह सिफारिश से नौकरी नहीं करना चाहता।

कुत्ते नाटक में नौकरी पेशा विवश लड़कियों के प्रति आफिस के अधिकारी मि. कपूर और मि. बोरकर की श्वान वृत्ति को उभारा गया है। मि. आभा के प्रति बुरी निगाह दोनों की काम पिपासा है।

Hansa Mehta Library, University of Baroda

इन दोनों सामाजिक कुत्तों की ढलती उम्र में कामपिपासा और गन्दी हरकतों से तंग आकर मिस आभा कहती है " इन कुत्तों को यदि बहुत पुच करोगी तो नुकसान पहुँचायेंगे । इन्हें बस तू और धत् से बहलाते रहें, भूखे कुत्ते हैं, इन्हें रोटी से ज्यादा मांस प्रिय है । मांस का टुकड़ा दूर से दिखाते रहें, बस पूँछ हिलाते रहेंगे । 45. इस प्रकार तिलचट्टा कर्फ्यू अब्दुल्ला, दीवाना, आदि नाटकों में सामाजिक जीवन की विद्रूपताओं का खुलकर पर्दाफास किया गया है । सामाजिक जीवन की विसंगतियाँ और विद्रूपताओं को उभारने में निश्चय ही यह नाटक अपने आप में एक महत्त्व पूर्ण उपलब्धि है ।

सन्दर्भ सूची

चतुर्थ परिच्छेद

1. धनंजय: दशरूपकम् पृष्ठ 63
3. देवयानी का कहना है, रमेश बक्षी पृष्ठ 24
4. सुनो सेफाली : डा॰ कुसुम कुमार पृष्ठ 27
5. नगर : विष्णु प्रभाकर पृष्ठ 71
6. विवेचना: इलाचन्द जोशी, पृष्ठ 124
7. देवयानी का कहना है, रमेश बक्षी पृष्ठ76
8. कजरी वन : डा० लक्ष्मी नारायण लाल पृष्ठ 61
9. दरिन्दे, हमीदुल्लाह पृष्ठ33
10. सुनो सेफाली, डा॰ कुसुम कुमार पृष्ठ 59
11. तीसरा हाथी, रमेश बक्षी पृष्ठ 41
12. वही पृष्ठ 40
13. सादर आपका, दया प्रकाश सिन्हा, पृष्ठ 21
14. दरिन्दे, हमीदुल्लाह पृष्ठ 33
15. सादरआपका: दया प्रकाशसिन्हा पृष्ठ 72
16. वामाचार, रमेशबक्षी पृष्ठ 38
17. उत्तर उर्वशी, हमीदुल्लाह पृष्ठ 47
18. और एक अजनबी, मृदुलागर्ग, नटरंग अंकन-19, पृष्ठ 27-28
19. द्रौपदी, सुरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ10 नटरंग अंक- 14
20. द्रौपदी " पृष्ठ 12 " "
21. सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, सुरेन्द्र वर्मा पृष्ठ 45
22. वामाचार: रमेश बक्षी, पृष्ठ 15
23. घरौंदा..... शंकर शेष पृष्ठ 18
24. देवयानी का कहना है: रमेश बक्षी पृष्ठ 72
25. सुरेन्द्र वर्मा, आठवाँ सर्ग पृष्ठ 19-22
26. मणिमधुकर :खेलापोलमपुर पृष्ठ 28

27. पीली दोपहर , जगदीश चन्द्र चतुर्वेदी पृष्ट 10

28. न धर्म न ईमान, रेवती सरन शर्मा, पृष्ट 50

29. चिराग की लौ, रेवतनी सरन शर्मा पृष्ट 44

30. उत्तर उर्वशी, हमीदुल्लाह पृष्ट48

31. घरौंदा, हमीदुल्लाह पृष्ट 57

32. अत: किम् ,राधाकृष्ण सहाय पृष्ट 72

33. सूर्यकी अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरणतक पृष्ट 51

34. वही सुरेन्द्र वर्मा पृष्ट 51

35. लक्ष्मी नारायण लाल के नाटक डा॰ दया शंकर शुक्ल पृष्ट 122

36. ओह अमेरिका, दया प्रकाश सिन्हा, पृष्ट 81

37. "वामाचार" रमेश बक्षी पृष्ट 41

38. सूर्य का अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक सुरेन्द्र वर्मा पृष्ट51

39. दरिन्दे, हमीदुल्लाह पृष्ट 34

40. वही पृष्ट 8

41. तीसरा हाथी, रमेश बक्षी पृष्ट 71

42. कुत्ते, सुरेश चन्द्र शुक्ल पृष्ट 20

43. तेन्दुआ : मुद्राराक्षस पृष्ट 69

44. सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक सुरेन्द्र वर्मा पृ॰ 49

45. कुत्ते: चन्द्र पृष्ट 32